Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 6 ~ Issue 7 (2018) pp: 62-69
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

मेवात का आधुनिक कबीर : लार्ड सन्नू मेवाती

डॉ.देशराज वर्मा
हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय, राजगढ़ (अलवर) राज.

शोध पत्र सारांष

'मेवात' एक सांस्कृतिक वैभव सम्पन्न भौगोलिक से अधिक जातीय पहचान वाला विषिष्ट अंचल है। यह मेवात मत्स्यांचल का ही भूभाग है जिसमें अलवर–भरतपुर (राजस्थान), हरियाणा के नूँह मेवात–पलवल गुरुग्राम तथा उत्तरप्रदेष के कोषी मथुरा तक का क्षेत्र आता है। वैसे अलवर और नूँह इसके केन्द्र कहे जा सकते हैं। इस अंचल में लोक–काव्य की एक गौरवमयी परम्परा रही है जिसमें मेवाती दोहों का अपना विशिष्ट स्थान रहा है। इसी दोहा परम्परा में सन्नू मेवाती का खास स्थान है।

मेवाती दोहाकर सन्नू मेवाती का जन्म सन् 1929 में अलवर जनपद (राजस्थान) के छांगलकी, बडौदा मेव में एक निर्धन एवं अषिक्षित मेव परिवार में हुआ। उन्होंने पषुपालन और कृषि संस्कृति के देहाती परिवेष में से निकलकर अलवर के राजर्षि कॉलेज में हिन्दी–अंग्रेजी की उच्चषिक्षा पाकर व्याख्याता पद को सुषोभित किया। आपने मदरसों के बजाय खुली वैज्ञानिक चेतना वाली तालीम की पक्षधरता में सदैव लिखा–बोला। क्रिकेट प्रेम के कारण आपको सम्मानपूर्वक सभी लार्ड साहब ही कहते थे। कोट–पेंट टाई के साथ साफा उन्हें मेवाती बनाता रहा है।

सन्नू मेवाती ने मेवात–गौरव के सरोकारों को उजागर करने के लिए बहुत से दोहों की रचना की। लेकिन धर्म, जाति, पंथ तथा क्षेत्रीयता की कट्टर दीवारों को लांघकर आपने सदैव मनुष्यता को केन्द्र में रखा तथा दोहे रचे। सामाजिक समरसता को लेकर तीज–त्योहार, मावस, हल, बैल, खानपान, पहनावा, आदर्ष नायक आदि को अपने दोहों में समाहित किया। आपने ऐकेष्वरवाद, धार्मिक समन्वय, सदाचार, नवरहस्यवाद, पाखण्ड–अंधविष्वासों का विरोध आदि को जनभाषा मेवाती में व्यक्त किया। इन सभी की सामूहिक परिणति उन्हें कबीर बनाती है। कबीर जैसा साहस और फक्कड़पन भी सन्नू में बना रहा। कुल मिलाकर इन्हीं सरोकारों को केन्द्र में रखकर उनके कबीर जैसा होने की तलाष की गई है।

उद्देष्य

भारत जैसे विषाल भूभाग वाले राष्ट्रों में सांस्कृतिक विषिष्टताओं का होना स्वाभाविक है। किसी भौगोलिक इकाई की पहचान उसके सांस्कृतिक कारणों से अधिक प्रखर हो उठती है। इसी प्रसंग में राजस्थान के अलवर, भरतपुर जनपद, हरियाणा के नूँह, पलवल तथा उत्तरप्रदेष के कोषीमथुरा तक फैले मेवात इलाके का अपना विषिष्ट महत्व एवं पहचान है। भौगोलिकता की सीमाओं से अधिक मेव कौम की बहुतायत, उनकी मेवाती बोली, सामाजिक समरसता तथा लोकसाहित्य की जीवन्त उपलब्धता के कारण मेवात अंचल मुँह बोलता नजर आता रहा है। यहाँ के सांस्कृतिक वैभव को मेवाती के ज्ञात–अज्ञात रचनाकारों ने बताया ही नहीं वरन् बचाकर आज तक जीवित जीवंत बनाये रखा है। सन्त लालदास, सादल्ला, नबीखां, खक्के, अलीबख्श आदि की लोक परम्परा में नीति आदर्ष, धर्म, सदाचार आदि की व्याप्ति भी मेवात का गौरव कही जा सकती है। मेवाती दोहाकार ने दूहाधाणी की परम्परा को बनाये रखा। इन्हीं दोहाकारों की आधुनिक परम्परा में सन्नू खां मेवाती का नाम बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है। जिन्होंने मेवात के सांस्कृतिक गौरव, भौगोलिक सीमांकन, तीज–त्योहार, कृषि और पषुपालन, मल्लयुद्ध, काला पहाड़, गीत–संगीत की संवाहक मीरासी कौम, मेवाती नायको आदि–आदि को केन्द्र में रखकर दोहों की रचना की है। इन दोहों में समूचा मेवात एक नायक की तरह खड़ा होकर जयघोष की मुद्रा में गाता है– धींग धरा मेवात। प्रस्तुत शोध पत्र में सन्नू मेवाती के दोहों में इन्हीं सूत्रों की पड़ताल दर्ज है।

परिकल्पना

मेवात की सामाजिकी सांस्कृतिकी के सन्दर्भ–सरोकार विचारणीय रहे हैं। इन्हीं विषिष्टताओं को दोहों में रचकर साकार करने वाले सन्नू मेवाती को आधुनिक कबीर कहा जा सकता है। कबीर जैसी प्रखर सामाजिक दृष्टि तथा अक्खड़–फक्खड़पन को लिए मेवात की धर्म–निरपेक्ष पहचान, धार्मिक कट्टरता का विरोध तथा मनुष्यता की पक्षधरता उनके दोहा–संसार में देखी जा सकती है। मुसलमान होकर भी शरीयत के बंधनों से ऊपर उठकर अंग्रेजी की तालीम, मेवाती हिन्दी में लेखन तथा धार्मिक सहिष्णुता की पैरोकारी उन्हें कबीर का आधुनिक संस्करण घोषित करने के लिए पर्याप्त हैं। सन्नू की इसी परिकल्पना को खोजने का प्रयास है ये आलेख।

सन्दर्भ स्रोत

प्रस्तुत शोध पत्र में प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का सहारा लेकर विषय को परिपुष्ट करने का प्रयास किया गया है। विषय के संदर्भ में मूल पुस्तकों के साथ–साथ आधिकारिक विद्वानों के विचार, व्यक्तिगत पर्यवेक्षण, डायरी, समाचार–पत्रों तथा वेब माध्यमों का भी यथायोग्य साभार उपयोग किया है। इस अध्ययन की प्रकृति साहित्यिक अध्ययन पर आधारित है।

मेवात का आधुनिक कबीर : लार्ड सन्नू मेवाती

आधुनिक समय एवं समाज अपने लोकतांत्रिक मूल्यों के कारण विशिष्ट है। 'कोई नृप होइ हमें का हानि' तथा 'जासु राज प्रिय प्रजादुखारी' वाली मानसिकता के स्थान पर जनवादी सोच या जनता के हित को ध्यान में रखकर लोककल्याणकारी राज्य की परिकल्पना की गई है। नागरिकों के मौलिक अधिकारों के समान्तर स्वतंत्रता, समानता, न्याय तथा धर्म निरपेक्ष (पंथ निरपेक्ष) राज्य के सरोकार व्यापक सन्दर्भ खोलते हैं। इन्ही सरोकारों की साहित्यिक या काव्यात्मक अभिव्यक्ति हमें मध्यकालीन भक्तों, कवियों तथा सन्तों में देखने को मिलती है। तुलसी और जायसी के लोक तत्व तथा लोकसंग्रह की भावना से जनमानस अनुप्राणित रहा है, लेकिन कबीर इनसे कहीं ज्यादा विलक्षण हैं। कबीर बाह्याचारों तथा धार्मिक अंधविष्वासों पर इतने अधिक धारदार अमोघ प्रहार करते हैं कि कुछ लोगों को वे नास्तिक जैसे लगने लगते हैं। यह सच है कि नास्तिक अधिक जिम्मेदार, खरा, मानवता के अस्तित्व का पक्षधर, तथा कर्मठ प्रयत्नशील होता है, क्योंकि वह ईष्वर से अधिक स्वयं के सचेत व्यक्तित्व की पैरवी करता है। निर्गुण संत कबीर तो आस्तिकता– नास्तिकता के दोनों ध्रुवों से अलग अनूठे हैं। वे किसी धर्म या सम्प्रदाय को नहीं ललकारते वरन उस पंथ में पनपे दोषों और बुराइयों से सीधे–सीधे टकराते हैं, भिड़ जाते हैं। वे पहले साहित्यिक हैं जो पण्डितों–मौलवियों को 'आन बाट राह से क्यूं नहीं आया' कहकर जैविक दलील देते हैं तथा उनके तथ्य और सत्य इसलिए मान्य हैं कि वे वैज्ञानिकता की कसौटी पर खरे उतरते हैं।

कबीर एक साथ धर्मसत्ता तथा राजसत्ता से टकराते हैं तथा आम आदमी की आवाज को वाणी देते हैं। समदर्शिता, प्रेमतत्व, अभिव्यक्ति की आजादी, जीव मात्र पर दया, खरा कहने तथा सुनने का माद्दा, बुराइयों पर तार्किक प्रहार, लघुमानव की पक्षधरता, कर्म का कत्तव्यपूर्ण सन्देश, धार्मिक सामाजिक सहिष्णुता, सद्भावना, अनुभूति की प्रामाणिकता जो कि धर्म– जाति से ऊँची है, आदि सन्दर्भों के कारण कबीर पहले लोकतांत्रिक कवि हैं। सारांश यह है कि कबीर मध्यकाल के आधुनिक और धर्मनिरपेक्ष कवि हैं। इसी क्रम में मेवाती दोहाकार सन्नू मेवाती का नाम बड़े सम्मान के साथ लिया जा सकता है।

मत्स्यांचल का 'अलवर' मेवात का महत्वपूर्ण केन्द्र है। यह मेवात अंचल अपने भौगोलिक, धार्मिक एवं सामाजिक सरोकारों के कारण विशिष्ट है। आलोचक **डॉ. जीवन सिंह के अनुसार–** " मेवात, आज एक सांस्कृतिक इकाई के रूप में अस्तित्ववान है, जो देष की राजधानी दिल्ली की दक्षिणी सीमा से सटे हरियाणा के गुडगाँव और फरीदाबाद जिलों तथा राजस्थान के अलवर एवं भरतपुर जिलों में फैला हुआ है। हिन्दी के बोली क्षेत्रों की दृष्टि से यह हरियाणवी, कौरवी और ब्रजभाषा के बीच एक छोटा–सा जीवन क्षेत्र है जो आदिकाल से ही सत्ता–संघर्ष के चलते उपेक्षा एवं पद दलन का षिकार रहा है।"[1]मेवात के इसी अंचल में दोहाकार सन्नू मेवाती कबीर की भाँति नवरहस्य समाज सुधार तथा जनभाषा का ताना–बाना बुनते हैं।

राजस्थान के अलवर जिले के (बडौदा मेव के समीप) छांगलकी गॉव में 7 मई 1929 को सन्नू मेवाती का जन्म हुआ। कवि लार्ड सन्नू मेवाती मेवात अंचल के आधुनिक कबीर कहे जा सकते है। मुस्लिम कौम में निर्धन एवं अशिक्षित माता–पिता के घर में जन्म लेकर भी कवि बहुत सी बाधा– रूकावटों को रौंदकर औपचारिक शिक्षा ग्रहण करता है। उनकी समदृष्टि, धर्मनिरपेक्ष–वैचारिकता, पाखण्ड़ों का विरोध, धर्माडम्बरों की निरर्थकता, सदाचार तथा नैतिकता के प्रति दृढ़ आस्था, रहस्यवादी चेतना, ऐकेष्वरवाद, धार्मिक सांस्कृतिक सहिष्णुता आदि गुणों की अनुभूति एवं अभिव्यक्ति उन्हें मेवात का आधुनिक कबीर घोषित करती है। उनकी लेखनी दोहे या दूहो के रूप में व्यक्त हुई है। हाँलाकि उनके दोहों का विधिवत प्रकाशन अभी नहीं हो पाया है। आपकी दोहावली प्रकाशनाधीन है। डॉ. अनूप सिंह सन्नू मेवाती का परिचायात्मक विवरण देते हुए कहते हैं– "मेवात क्षेत्र में लार्ड सन्नू 'मेवाती' स्वघोषित लोक कवि हैं। उनके दोहे तो लोकप्रिय हैं ही उनके द्वारा रचित व संकलित पहेलियाँ भी हमारा ध्यान आकृष्ट करती हैं। लार्ड सन्नू अंग्रेजी षिक्षा प्राप्त आधुनिकता के समर्थक व्यक्ति हैं। एक ओर उन्हें मेवात प्यारा है तो दूसरी ओर वे यहाँ व्याप्त अषिक्षा, आर्थिक तंगी, धार्मिक कट्टरता आदि से आहत भी हैं। उनमें एक साथ आधुनिकता बोध भी है और जातीय स्वाभिमान भी। जाति, समाज व देष के प्रति व सम्मान के अलावा मनुष्य के स्वाभिमान की रक्षा उनकी रचनाधर्मिता का चरम है।"[2]कवि सन्नू को निम्नांकित सन्दर्भों के आधार पर मेवात का आधुनिक कबीर कहा जा सकता है–

निराकार करतार हैः–

कबीर की भाँति कवि सन्नू पारब्रह्म परमात्मा को निर्गुण–निराकार अभेद तथा गुणातीत मानते हैं। वह विचार तथा अनुभूतिगम्य है। अज्ञात–अपरम्पार खुदा–परमात्मा को केवल निर्मल– पवित्र विचार द्वारा हृदय में ही पाया जा सकता है। बाह्य साधनाओं तथा आडम्बरों से उसे नहीं पाया जा सकता। बूँद रूप मनुष्य के लिए वह सागर रूप है, साधक भक्त हजार रूप तो भगवान लाख रूप है, बड़े–बड़े साधक–ऋषि भी उसका पार नहीं पा सके हैं। अनुभूति स्तर पर वह फूल की सुगंधि से भी सूक्ष्म है। मानव की सारी अक्ल प्रतिभा का स्रोत वही है। वही जग का पालनहार है। यदि खुदा की मेहर हो तो हिय में टटोलने पर वह मिल सकता है। उस निराकार खुदा या सत्ता को विभिन्न धर्म मजहबों में

*Corresponding Author: डॉ.देशराज वर्मा

खुदा, रब, गौड, गुरू, भगवान, प्रभु नाम से जाना जाता है तथा मठ–मंदिर, चर्च, मस्जिद, गुरूद्वारे आदि उसके पूजा स्थल हैं। जहाँ जाने पर उसकी याद आती है। सन्नू कवि अपने दोहों में लिखता है–

सब ही कू अज्ञात है, उसर्वोच्च विचार।
निराकार करतार है, सन्नू अपरम्पार।।

आत्मा र परमात्मा, रहे सदा ही संग।
उवासु जा मिले है, बिछड़ जाय सब अंग।। (पंचमहाभूत)
कितना होगा ओलिया, सन्नू सूफी सन्त।
जाण सको कोई नहीं, या दुनिया को तन्त।।
सन्नु सोच इन्सान तू, भ्रमित कहां तक होय।
घट भीतर ही ढूँढ़ ले, शांति मिलेगी तोय।।
खुदा सभी की जरूरत, सन्नू पड़े न पार।
जग को पालनहार ही, चला रहो संसार।।
जो सन्नू मन बात है, तेरे मन भी होय।
ऐसो तब ही होय जब, मिहिर खुदा की होय।।
सोच सोच विद्वान सब, पहुँच जहाँ तक जाय।
रब सीमा सू परे है, सनू पहुँचे नाय।।
जो सबसू अज्ञात है, सन्नू न कोई रूप।
परम पिता परमात्मा, निर्मल ज्योति स्वरूप।।
कैसे भी कोई भजै, सन्नू कर सम्मान।
सहस रूप इन्सान तो, लाख रूप भगवान।।
दिल में उठे उमंग अर, दिल में उठे विचार।
निर्मल सन्नु विचार तो, सुख पावै संसार।।
पतो न वाको है कहीं, कहाँ ढूँढणे जाय।
सन्नू हिय टटोल लै, तो शायद पा जाय।।

खुदा खजानो अक्ल को, कदै न कम हो पाय।
सन्नू अकल लगाय के, माणस दियो बनाय।।
ईष्वर अल्ला गौड गुरू, है सब रब का नाम।
मंदिर मस्जिद चर्च मठ, सन्नू रब का धाम।।[3]

सन्नू कवि ने पारब्रह्म परमात्मा को खुदा सम्बोधन से नवाजा है। उनके खुदा निर्गुण की सभी उपाधि–विशेषताओंसंयुक्त हैं–

खुदा सभी की जरूरत, सन्नू पड़े न पार।
बिना खुदा के सहारे, भटका सन्त अपार।।
तरह तरह सू इबादत, करे आज इनसान।
सन्नू कर सम्मान तू, जैसो भी ईमान।।
कितना पैगम्बर हुआ, अर कितना औतार।
सन्नू वा करतार की कोई न पायो पार।।
खुदा न देखो किसी ने, पर सन्नू विष्वास।
कटै जिन्दगी चैन सू, ई सबकी अभिलाष।।
कितना होय होयगा, कितना माणस आज।
शकल किसी की ना मिलै, सन्नू रब को राज।।[4]

मृत्यु का सत्यः– मृत्यु जीवन का अवश्यम्भावी विराम है। जीवन चक्र का अंतिम पड़ाव है। देहधारी को उससे गुजरना होगा कबीर मृत्यु के लिये 'पानी केरा बुदबुदा' कहकर मनुष्य की नष्वरता को व्यक्त करते हैं। चार कांधे और कब्रिस्तान का वर्णन सन्नू कवि भी करता है –

आपणा घर में लेट के, पड़दो मुख पै ड़ार।
सोगो गहरी नींद में लम्बा पाँव पसार।।
सबसू आगे चल दियो, कंधे हुयो सवार,
पोहुंचो कबरस्तान में अपणा घर के द्वार।।
जब माणस मर जाय है, कौण कर फिर याद।
दिन दिन मिटती जाय है, बाकी सब मरजाद।।

(हस्तलिखित प्रतिलिपि से साभार)

जीवन चक्र की अवस्थाओं को चाहते न चाहते भी कोई नकार नहीं सकता–

दुनिया एक सराय है, दो दिन को बासो।

*Corresponding Author: डॉ.देशराज वर्मा

आँच मिचा पै खतम है, सन्नू सबको सांसों।।
जन्म लेय बचपन पले, फिर ज्वानी आ जाय।
सन्नू आय बुढ़ापा, मौत साथ ले जाय।।
(साक्षात्कार से)

दुनिया एक सराय है। मुसाफिर को आगे जाना है। उसकी मंजिल आगे है–

सुख में कर तू शुकरिया, दुःख में कर फरियाद।
सदा खुदा अर मौत कू, सन्नू रख तू याद।।
जीणा सूमन ना भरै, मरणो चाहे कौण।
जाणे कुण कद चल बसै, आय न सन्नू सौण।।
नू तो तोकू काम है, सन्नू सदा बहोत।
अैपर हरदम याद रख, सदा खुदा अर मौत।।
जाणो सब कू होयगो, अपणी अपणी बार।
सन्नू अपणी बार कू, तू भी रह तैयार।।
होतो आयो है यही, यू ही चलतो जाय।
सनू जाणो होयगो, अमर कोई भी नाय।।
(हस्तलिखित प्रतिलिपि से साभार)

मौत की बारी पर सभी की डोली बिन मुहूर्त उठा ली जायेगी। मृत्यु की यह याद जीव को बुरे कर्मो से बचाती है तथा ईष्वर खुदा की याद बनाये रखती है। यह इसका सकारात्मक पहलू है। मानव जीवन नष्वर है परन्तु उसकी आशा––तृष्णाएँ अनष्वर हैं। कबीर भी कहते हैं कि मन माया नहीं मरे हैं, शरीर मरते रहे हैं। आयु पल पल मुट्ठी की रेत तथा फूटे घड़े के पानी की तरह रिसती– फिसलती जा रही है। जीवन आने–जाने की चक्की बन रही है–

एक खिलोणो कांच को, है माणस की काया।
बिखर जाय कर टूट के, सब रब की माया।।
धीरे धीरे हाथ सू उमर खिसकती जाय।
धीरे धीरे मौत की मंजिल आती जाय।।
दुनिया एक सराय है, कोई आवे कोई जाय।
सन्नू कोई सो बरस, कोई दो पल कु आय।।[5]

मजहब नहीं सिखाताः– सन्नू कवि का मन्तव्य है कि धर्म सम्प्रदाय तोड़ने का नहीं, वरन जोड़ने का काम करते हैं। धर्म के तीन स्वरूप शास्त्र सम्मत हैं– दार्शनिक पक्ष, पौराणिक पक्ष तथा अनुष्ठान पक्ष। इनमें पौराणिकता तथा अनुष्ठान पद्धति तो अलग–अलग हो सकते हैं परन्तु सभी धर्मो का दार्शनिक स्वरूप तथा मूल्य चेतना एक ही है। धर्म के प्रतिनिधि या प्रवक्ता उसके स्वरूप को स्वरूचि तथा हित के अनुरूप ढालते रहे हैं। स्वामी विवेकानंद ने तो प्रत्येक व्यक्ति के लिए उसकी मूल प्रकृति तथा रूचि के अनुसार धर्म चुनने देने की वकालत की है। जितने व्यक्ति, उतने धर्म हों। लार्ड सन्नू मेवाती के क्रम में आलोचक डॉ. जीवन सिंह की प्रतिक्रिया द्रष्टव्य है–"मेव समुदाय की बहुलता होने से इस इलाके का नाम मेवात पड़ा। मेवात का अर्थ– मेव समुदाय का स्थान। इस समुदाय का खान–पान, रहन–सहन, रीति–रिवाज, रक्त–सम्बन्ध; सामाजिक–संरचना, वेषभूषा, बोली, सांस्कृतिक मनोरचना आदि दूसरे समुदायों से इतनी विलक्षण और विषिष्ट रही है कि आज भी मेव को अलग से पहचाना जा सकता है।[6]

विविध धर्म, सम्प्रदाय, फिरका, मत मतान्तर अलग–अलग पथ–रास्ते हैं, निमित्त हैं, माध्यम हैं परन्तु सबकी मंजिल एक है, धर्म मनुष्य को तसल्ली देता है, दौड़ से विराम देता है। सन्नू कवि कहता है–

न्याली–न्याली इबादत, न्याला–न्याला धाम।
न्याली–न्याली गैल है, सन्नू एक मुकाम।।
धरम तसल्ली देय है, सन्नू मन भटकाव।
मिलै खुदा को सहारो, मन कू मिले पड़ाव।।
जहाँ अकल इन्सान की, खतम होय हरबार।
सन्नू आगे खुदा है, यही धरम को सार।।
मझब बिना भटके मनुज, मझब तसल्ली देय।
सन्नू मन में खुदा है, साँस चैन की लेय।।
जड़ अर मूल है एक सा, सब धरमन को सार।
न्याली–न्याली डाल है, सन्नू फल इकसार।।
मजहब में न दलील दे, अंधो होके मान।
याही में सन्नू सदा, धरम करम की शान।।[7]

सामाजिक–धार्मिक समरसताः– मुस्लिम कौम में जन्म लेने के बावजूद लार्ड सन्नू तथाकथित धार्मिक कट्टरता के कायल नहीं रहे हैं। बचपन से प्रगतिशील विचारधारा, समन्वय, समदर्शिता उनके खून में रची बसी रही है। धर्म बुरा नहीं वरन जो बुराई पर उतर आये वह इन्सान बुरा है। कवि की दृष्टि में सभी धर्म एक बगिया के न्यारे–न्यारे पेड़ हैं जिन्हें आपस में कोई शिकवा शिकायत नहीं तो हमें क्यों ? गीता, वेद, कुरान, बाईबिल आदि विविध धर्मग्रंथों की मनसा एक है, सभी का उद्देश्य मानव को स्वस्थ, सुन्दर तथा बलवान बनाना है। विशिष्टता की बात को कवि गडरिया द्वारा पहचान हेतु भेड़ों

*Corresponding Author: डॉ.देशराज वर्मा

की पूँछ रंगने के सन्दर्भ में व्यक्त करता है। सन्नू के समकालीन डॉ. जीवन सिंह मानवी ने लिखा है– "..... इसी परम्परा में लार्ड सन्नू मेवाती का नाम आधुनिक मेवाती शायर के रूप में विषेष तौर पर उल्लेखनीय है, जिन्होंने मेवात की भौगोलिक, ऐतिहासिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संरचना का चित्रण अपने विषिष्ट मुहावरे एवं लहजे में किया है। मेवाती लोक साहित्य एवं संस्कृति की दुनिया में लार्ड सन्नू मेवाती एक प्रतिष्ठित नाम ही नहीं, वरन् भाईचारे व उद्दारता की समन्वित सामाजिक संस्कृति को सुदृढ़ करने का मजबूत कदम भी है। उन्होंने अपने जीवन काल में मुख्य रूप से लोगों के दिलों को जोड़ने का काम किया। साथ ही मेवाती आत्मगौरव की भावना को कभी कमजोर नहीं पड़ने दिया।"[8]

इस्लाम की धार्मिक सख्ती पर कवि नोटिस लेता है तथा उसका अभीष्ट उदार–सहिष्णुता है। वैसे मनुष्य को धार्मिक अलगाव के पचड़े से बचकर अपने मतानुसार अधिकाधिक ईष्वर–खुदा की बंदगी में समय लगाना चाहिये। विभिन्न साधक– फकीर सब मानवता के पहरेदार हैं। कवि का मत है कि विविध धर्म समाज तथा जीवन को रंगीन तथा आकर्षक बनाते हैं।अलग पहचान तथा श्रेष्ठता का अहंकार, धार्मिक कट्टरता तथा अलगाव का मूल कारण है। सन्नू कबीर की भाँति हिन्दू तथा मुस्लिम कौमों की अच्छाई तथा बुराइयों का निरपेक्ष विश्लेषण करते हैं–

गाय दान में देय हा, सन्नू सारा मेव।
अब मेवन के संग ही, सभी भूलगा टेव।।
मंदिर मस्जिद और ये, गिरिजा गुरूद्वारे।
सन्नू मंजिल एक है, रब के घर सारे।।
अकल मंद इन्सान सू, ही सन्नू आसा।
कितना पंथ बणा लिया, अर कितनी भाषा।।
मुल्ला पंडत पादरी, या होवे ज्ञानी।
ये सब पहरेदार हैं, सुण सन्नू ध्यानी।।
बोहत तरह का बणाया, है रब ने इनसान।
सन्नू सबकी बणाई, है न्याली पहचान।।
जो मेरे मन बात है, हूँ भी सन्नू होय।
अब वाके अखित्यार है, खुदा करे सो होय।।
गीता वेद कुरान अर, बाइबिल गुरू ग्रंथ।
सन्नू मंशा एक है, न्याला–न्याला पंथ।।
सन्नू न्याली बणा ली, दाढ़ी चोटी मूँछ।
जैसे ग्वालो रंगे है, सब भेड़न की पूँछ।।
और धरम आसान है, सख्त सन्नू इसलाम।
कट्टरपंथी सबन में, उनका सभी गुलाम।।
ईष्वर अल्ला खुदा रब, गौड गुरू भगवान।
तरह–तरह का नाम सू, भज सन्नू नादान।।
सोतो रब को नाम ले, जागो लेके नाम।
बड़ी तसल्ली मिलेगी, सन्नू बणेगा काम।।[9]

धर्म के इतिहास तथा अनुष्ठान पद्धितियों में भेद हो सकता है, परन्तु उनकी दार्शनिक चेतना एक है। माणस (इनसान) धर्म से बड़ा है–

दुनियां में इन्सान सू कुछ भी नहीं महान।
उभी सन्नू सिर झुका, भजै है भगवान।।

कहीं गाय कहीं सुअर, दोनों भिस्टा खांय।
सनू गंदी जगह ही, दोनों ही पा जाँय।।
आदम सू सब आदमी, मनु सू मानव जात।
सन्नू कई नसल रंग, धरम जात अर पात।।[10]

नौद्वारा को पिंजराः– कबीर ने मनुष्य देह को साधना का सर्वश्रेष्ठ औजार मानते हुए दशद्वारे का पिंजरा कहा है। कायायोग का यह विराट् सन्दर्भ है। परन्तु सन्नू कवि मानस की देह को नौ द्वारे का पिंजरा कहते हैं। दसवां द्वार गुप्त द्वार है।

कवि सनू ने कायायोग के सरोकारों को भी वाणी दी है। मानवदेह की विलक्षण रचना में कुण्डलिनी साधना तथाआत्मिक मण्ड़लों के सन्दर्भ बड़े मायने रखते हैं। कबीर की भाँति सन्नू कवि ने मानव देह को नौ द्वारे का पिंजरा कहकर अपनी साधनात्मक अभिरूचि तथा अनुभूति को व्यक्त किया है। सांसों का इकतारा तन के तम्बूरे में अनहद नाद का संगीत झंकृत करता रहता है। दशद्वारे का पिंजरा जिसमें जीव रूपी पंछी कैद है–

नौ द्वारा को पींजरो, रब ने दियो बणाय।
वा में पंछी मुँध रहो, जाणे कद उड़ जाय।।
नौ द्वारा को पींजरो, सन्नू माणस देह।
खाण पीण के बाद है, मल मूत्र को गेह।।
तीन तो दुहरा द्वार हैं, तीन हैं एकल द्वार।

माणस का शरीर में है, नू सन्नू नौ द्वार।।
तन तो है तम्बूर ज्यूँ, मन है सन्नू तार।
साँस–साँस में सुर बसै, चार धाम झंकार।।[11]

इस तरह कवि सन्नू के साधनात्मक दोहे मनुष्य के बाह्य जीवन से अधिक आन्तरिक समृद्धि तथा आनंद का जयघोष करते जान पड़ते हैं।

माया महाठगिनीः– कबीर की भाँति कवि सन्नू माया को ईष्वर प्राप्ति के मार्ग में बड़ी बाधा मानते हैं। माया का झीना आवरण निज स्वरूप को लखने नहीं देता। प्रकारान्तर से मायाजन्य चंचलता आत्मबिम्ब को चलायमान कर देती है। माया–शैतान को कमजोर करके ही आत्म साक्षात्कार किया जा सकता है। हवस, शैतान, माया, नफ्स आदि साधना के मार्ग की रुकावटें हैं। कवि कहता है–

करण देय ना बंदगी, धरण देय ना ध्यान।
सन्नू माया बीच में, जाल बिछायो आन।।
नफ़्स मार के हवस कू कर दे तू कमजोर।
नू सन्नू मर जायगो, तेरा दिल का चोर।।
ऐसी हड्डी हवस की, कर दे रब सू दूर।
सन्नू तू हर द्वार में, रहियो सदा हजूर।।[12]

इन दोहों को पढ़कर कबीर की माया महाठगिनी हम जानी तथा ठगिनी क्यूं नैना चमकावै जैसी पंक्तियों का सहज स्मरण हो आता है।

जीव दया :–कबीर द्वारा पत्ती खाने वाली बकरी की खाल उतारने तथा बकरी को ही खा जाने वाले लोगों की कौन हवाल कहकर दुर्दशा का चित्रण करना जीव दया तथा शाकाहार का विराट सन्दर्भ है। मुस्लिम कौम के चौकीदार सन्नू कवि का शरीयतों की कट्टरता तथा अन्धविष्वास पर प्रहार करना उनकी मानवीय दृष्टि का इन्द्रधनुषी क्षितिज है। यह बड़ा सन्दर्भ है–

बकरा की तो जाय है, सन्नू हर विधि ज्यान।
झटका और हलाल में, होय कोई विधान।।

दया धर्म का मूल है। सहानुभूति जब स्वानुभूति का पारस–परस करने लगे तो इन्सानियत की ध्वजा लहराने लगती है। सभी धर्मों की दार्शनिकता का सारांश यही है। जब जीव मात्र के प्रति संवेदनशीलता धर्मशास्त्रों का अतिक्रमण करने लगे, तब मानिये कि कोई क्रांति घटने लगी है। धर्म की पुष्टि जब तुम्हारा हृदय करने लगे तब समझ लेना कि अनहद की मधुशाला से दो घूँट तुमने भी चखली है। बाहरी कर्मकाण्ड और व्यवहार का गुंजलक तुम्हें उलझायेगा। कबीर तथा सूफियों का यह अनगढ़, खरा तथा मौलिक सन्देश सन्नू के दोहों में साखी बनकर आमंत्रण देता है। यह सन्देश केवल मुस्लिमों के लिये नहीं,वरन मानव मात्र के लिये है। आतंकवाद नये जमाने की ज्वलंत समस्या है तथा अक्सर इसे तथाकथित धर्म–सम्प्रदाय के सरोकारों से जोड़ा जाता है जो कि ठीक नहीं है। सोच तथा मानवीय धरातल पर आरूढ़ होकर ही इसे समाप्त किया जा सकता है। सन्नू कवि की भी अभिलाषा है–

दुनिया रहवै चैन सू, सन्नू सदा निःशंक।
जड़ सू होवे खतम ई, जो फैलो आतंक।।

समदर्शिता, वसुधैव कुटुम्बकम् तथा सर्वे भवन्तु सुखिन वाले जीवन मूल्य प्रकारान्तर से कवि का अभीष्ट है।

जिन पै चादर ज्ञान की :– सन्नू कवि ने धर्म साधना के इतिहास नायकों की प्रसंगावसात् भूरि–भूरि प्रशंसा की है। योगेष्वर भर्तृहरि के त्याग और वैराग्य, कृष्ण के गोचारण, भेड़ पालक ईसा मसीह, मोहम्मद साहब तथा निर्गुण सन्त कबीर तथा रामभक्त तुलसी आदि के ज्ञान वैराग्य तथा भक्ति को वाणी प्रदान की है। ये भक्त–अवतार गरीबी तथा अभावों में जीकर भी ज्ञान की उजली चादर से लबरेज रहे। पशु पालन संस्कृति की सहजता इनके लिए वरदान रही। कविकहता है–

देखो राजा भरथरी, त्याग और बैराग।
सन्नू कीमत चुकाई, हो सच्चो अनुराग।।
क्रिसन क्रीस्ट अर मोहम्मद तीनू हुआ महान।
सन्नू चरवाहा रहा, फिर भी गुण की खान।।
रहा लँगोटी लगा के, तुलसी और कबीर।
जिन पै चादर ज्ञान की, सन्नू सदा अमीर।।
क्रिसन चराई गाय अर, यीसु चराई भेड़।
मोहम्मद बकरी चराई, सन्नू सत का पैंड़।।
घणो ज्ञान को खजानो, वाह रे कबीरदास।
घर–घर राम पुजा दियो, वाह रे तुलसीदास।।
ईसा मूसा मोहम्मद सब, रब का सभी गुलाम।
गीता ग्रन्थ कुरान में, है सन्नू पैगाम।।[13]

हिन्दू, मुस्लिम तथा ईसाई धर्म नेता तथा धर्मग्रन्थ उसी एक शक्ति की ओर संकेत करते हैं। भक्ति ज्ञान तथा वैराग्य की त्रिवेणी में स्नात भक्त–साधकों की प्रेरणा से आज का जीवन भी स्पंदित है।

*Corresponding Author: डॉ.देशराज वर्मा

कौन वह जग का चित्राधारः– कवि खुदा ब्रह्म की बनाई खलकत के नजारों पर अभिभूत है। दुनियां जहान के पर्वत, झरने, वन सम्पदा, फूल–पत्तों के अलावा सूर्य, चन्द्रमा तथा तारों की बारात के चिर–यौवन का आलम अनूठा है। सूर्य, चन्द्रमा तथा नक्षत्रों को बुढ़ापा नहीं आता। दुनियां मरण–क्षरण से ग्रस्त है परन्तु इन उपादानों के रचयिता की सुन्दरता अकल्पनीय है। चारों खानि जीवा जूण के करतार (ब्रह्म) का करिश्मा अवर्णनीय है। जलचर, थलचर, अण्डज, पिण्डज, पक्षी, वनस्पति, मनुष्य आदि का पैदागर बड़ा जादूगर है। उसके पास कितने साँचे–खाँचे हैं, किसी की भी शक्ल सूरत आपस में नहीं मिलती। एक पेड़ के दो पत्ते भी एक जैसे नहीं। हर बार नई सूरत, नई सीरत। लार्ड सन्नू इस वैचित्र्य पर अभिभूत है–

हवा आग पाणी बणा, बणा दिया दिन रात।
सरदी गरमी बणा के, फिर सनू बरसात।।
आग हवा पाणी बणा, तारा चाँद बणाय।
सनू उपर खुदा ने, सूरज दियो बिठाय।।
ये ही पंछी पेड़ अर, सन्नू माणस दौर
ये ही जलचर बणाया, क्यूं न बणाया और।।
दुनिया बड़ी सुहावणी, सन्नू औ करतार।
पाहड़ नदी झरना घणा, कहीं सागर विस्तार।।
हवा आग पाणी बणा, रच दी जीवा जोण।
माणस पशु पक्षी बणा, जलचर सन्नू मौन।।
रात दिनाँ को सिलसिलों, सन्नू रूत आवै।
रंग–बिरंगा फूल खिल, खुशबू बिखरावै।।
खुदा सभी को बाप है, सन्नू रची जहान।
सूरज चाँद बणाय के, बणा दियो इनसान।।
माणस डोले भटकतो, सन्नू, महारो नाय।
हार और झख मार के, शरण खुदा की आय।।[14]

अदृश्य चित्रकार का चलचित्र अनूठा है। वही रंग–बिरंगे चित्र बनाता है, यही अपने कैनवास पर काली स्याही की कूंची फेर देता है। छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा इन पंक्तियों का स्मरण हो आता है–

कनक से दिन मोती सी रात सुनहली साँझ गुलाबी प्रात।
मिटाता रंगता बारम्बार कौन वह जग का चित्राधार।।

ऐसी करनी कर चलोः–

भक्त कवि की तरह सन्नू का हृदय उदारता के सरोवर में हिलौरे मारता रहता है। सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय का लक्ष्य कवि का श्रेय और प्रेय है। सभी परमानंद के भोक्ता बनें। आत्मावलोकन का धनी सनू अपनी मंगलमयी छवि के कारण अमरत्व को पाने का सन्देश देता है। यश, कीर्ति तथा धन के व्यामोह से उपर उठकर वह स्थितप्रज्ञ अवस्था को पाना चाहता है। अपनी विशिष्ट प्रतिभा तथा सहभागिता के कारण व्यक्ति सदैव स्मरणीय बना रहता है। कवि कहता है–

सन्नू की इच्छा यही, रब सब कू मिल जाय।
जन्म मरण का भेद कू, उ सहजन पा जाय।।
जब सन्नू मर जायगो, बहुत करेंगा याद।
वा विन कोई बात में, आवेगो न सवाद।।
शकल अकल रब न दई, निर्मल दियो शरीर।
नाम और यश भी मिलो, सन्नू की तकदीर।।
कीरत सू मन ना भरै, नाय भरै धन सू।
सन्नू सांई सुमर तू, अपणा ही मन सूं।।[15]

आत्म सन्तोष के धनी कवि के इन दोहों को पढ़ कर सन्त कबीर की 'ऐसी करणी कर चलो हम हँसे जग रोय' वाली पंक्तियाँ याद आती हैं। कुछ समता तथा कुछ परिवेशगत विषमता के बावजूद मेवात अंचल की प्रगतिशीलता के पर्याय लार्ड सन्नू मेवाती को मेवात का आधुनिक कबीर कहना अधिक समीचीन होगा।

संदर्भ सूची :–

1 मधुमती : मार्च 2006, पृ. 47, राज.सा.अ. उदयपुर (पण्डून को कड़ा : एक प्रस्तावना)
2 चिराग ए मेवात, विषेषांक–4, दिसम्बर 2015, पृ. 50
3 सन्नू मेवाती का दोहा–संसार– सं. डॉ. देशराज वर्मा, डॉ. सहारिया– (साभारः धींग धरा मेवात को ऐसी सन्नू लार्ड)
4 वही
5 वही
6 मधुमती : मार्च 2006, पृ. 48

*Corresponding Author: डॉ.देशराज वर्मा

7 सन्नू मेवाती से साक्षात्कार : 2011
8 सन्नू मेवाती का दोहा–संसार– सं. डॉ. देशराज वर्मा, डॉ. सहारिया–भूमिका : 2018, मेवाती साहित्य अकादमी, अलवर राज.।
9 वही (साभारः धींग धरा मेवात को ऐसी सन्नू लार्ड)
10 सन्नू मेवाती से साक्षात्कार : 2011
11 वही
12 कवि के हस्तलिखित रजिस्टर से साभार।
13 वही
14 वही
15 सन्नू मेवाती का दोहा संसार.....।